830

D.S.C.

श्री

नवग्रह बुधाना सतगुरु कोवावा ॥३॥

येमित्तले आपल्याजेवाने

पंचसवकोत्तर शेंदी तीन तुकडा भाजे

साथसमुद्रवारलुही देऊनी तीनी सानी

बालकुमारी देवी नरसींगगुरुकीना

चासिंदुरचुरण्यसुपारीगुलाफ्या

नीकुराजतीदंतकेसरूपमारील

उरगतलेसरीलवलाऊसतवेंमसर

सुतीकोवाना

आशा ग्रंथावली

ASHA ARCHIVES

ढ़ँक सरवकोल भीतीनन्नुकुरा भाव
उसाधसमुद्रनारलाम दे उत्तीनीरा
निवालकुमारीरानीदेवी दुईवाउके
नीनरसिंगजुल्कीवावालेतेलके
सदीनछत्रपसीदुरयुरथसुधारी
बाजुलाजवोलीलेउरगालेबुधी
आउहासरीलेबलाउसातमाडाहुद्र
कोबाचासरस्वतीकीवाचाढ़ीमफ
तस्वाहा-धारे-)-प्रेमीनलेनुनाको
दि—— —— —— —— ——

ॐ श्रीसुमेरुजी तारापंचकल्याणकेभ्यो नमः
वेदसारत्रीक्षापुस्तकदीक्षावेदीपू
जनेसमवसरणजोकलशोस्थापनपी
ठस्थापनउपरिलाकलशस्थापनसपुं
पारघटोपरिगोमुखाकलशस्थापन
तथोपरिनेमिनाथकलशस्थापन
लाउवेदकुंडीकेपश्चिमदीवे
लगसाउपरलानापरलानापरला
नीकोओलीमायापुर्णवाचाराजा
नेकुशलाउनेकुराजेमालापाप
नीउघ

ॐ मंत्र जगाउने

ॐ गुरु का गुरु की वाचा र कृत दे
वा र कृते नी मा दं जल कं ने जल वाय
आफ्ना को दी ली उदाई आ उ मेरा
गुरु ली र दन वा र ये दवली जा उ फ्त
ला ना मानी स ला ई लागी जा उ फ क
न् की वा चा दु ई दीं वीं की वा चा ३ दी
की वा चा वा री म वा र ती पी ला पी ला
पो री त गरु ला भनु दु ई खु टे भे दो था
की र कृत दे वी ओ गा था ई मंत्र न जो
जा जो जा जो भोग भोग भाजो जी उ ना
री जी उ वा री र जी उ ना री ॐ अं फट् ।।
मंत्र जगाउने ३ चे राज की ठा स पले वा
कु शु न जेले भोग दो थ पी ॐ ह्रीं ह्रीं ।
पो हो र भे री वा ली ५ जो र सा ध्यु र स

पारीफुल मुकुटी ज्हारने ॥
ॐ हीं क्लीं श्रीं सकलीं सोंआं देनुज पां
फट् ॐ कीं कीं श्रीं श्रीं फट् दस्त्रा
धिपसे मुकुटी स्वाहा ॐ फट् ॥ वा०८
सेरराज पीजरनुदना मोहोमीजिद
राजमोहनी
ॐ श्रीरामाश्रीक्लीं श्रीमाहादेव
ॐ माँहानता योॐ अंनधीन दुरवगला
धरतीमोहजलमोहॐ अलमोहॐ आकास
मोहवायेंमोहराजसरेरमोहवीर
गलींजमाहादेवपार्वतीहुंकीमाहा
देवक्षोराजमोहनीयेंस्वरगोरा
पार्वतीकीमाहादेवकीवाचापरी
क्षुरचंदनमंत्रीबाउसंपूर्णोला
उनमोहनकंघन

श्री गणेशाय नमः

१॥ दादी बेना री छोरका चले को फोस
कुल को पोस दोला ——— १

२॥ बाजा नारी चरका चले वा पुको दो
भन ——— २

३॥ मूलका नारी चले दादी नो बोकसो
लागको भनु ——— ३

४॥ नपपेनारी चले वो कसी ले जाने को
भनु ——— ४

५॥ समुद्र घु पदा मैनारी घु मेवा गा
इका जुगा भनु ——— ५

६॥ कुवा का मा धा घु मदा मैनारी चले
अवसे मर्घ भनु ——— ६

पाडी ने मधुरा वाला चर का पुकुत्तं का
रहजा चले वीर को दोस भनु

ॐ नमः श्री गुरु आगम ॐ श्री सेन गुरु प्रथम
राजा धु गुरु ने कहा कुछ भाई तुम आपस में उधुला
मैं इन लाइन्स हाना — २ — तार महाल तनु —
ॐ नमः श्री गुरु आगमा को गरना नी — २ — वाग
वाने में न — — — — — —
ॐ नमः श्री गुरु आगमा को का ती मारा पो के — २ नागवा
ने सब मारने लोन छ — — — — — —
ॐ नमः गुरु आगमा अंधी धातो पी फु धु दि फ तस्मात्
प्रा तु दी के ग — वव —
गरु सेवा रे माड़ा की रीत स्व गुरु वा री की रीत
मा घ्र सरस्वती नम सत्यार ओर फन का नी धात मा घो क
मु खी मा मो तरा स्वा नु वी रा मी को हा त्मा समा दन्त दी नी
ज्ञा न स्वी जो पद्मी धात मा मा घो दी दी नु ना घो का रा मा
जो न्मा पा री फ ड़ा क नु — — — — — —
ॐ सी धी गुरु आगमा सो सा लुत्त क ढो त्त डो ड़ा न रू फ त स्वा
हा — २ पत्ती धी ना तपे गु ता रा म त्ती का पे गु —
ॐ ही श्रीं क ते रो व ध दे ना सपे दी स्वाहा — कारन्ड मन्त्र से बता
इस्था पुरा ज्ञाद — — — — — —
ॐ नमः श्री सेन गुरु आगमा ॐ नीडाढ़े से क्रोध की ज्वाला मुखी ह्रं
ह्रीं काली कालीं ह्रीं फट् स्वाहा — १ धोम मन्त्र नमः आगमा सत्य पे

फल्गुना प्रश्नोत्तर शुरु

ॐ नमः श्री गुरु आणि ॐ सार सारी जो सारी अमुक

स्थानात सारमो अमीपुरस्थळ - चार - दिशि ऊपदव

लोन को साद को इसी शुरु आपको वनवी ची

ॐ सीधी गुरु आण ॐ ठी देव दत्त तो ठी ही - चार दे

पासीन मेवन दे वस इक गुरु पन पनान की उगुरु वस

एक सत्य मन एक मारन शुरु पीर ॐ चमार शा मन्त्र

ॐ नमः सी की गुरु आण ॐ ठी ठी ही शुरु मात स्वाहा

चार - ने पासना

ॐ ग ग पत्ती गुरु पो जेनी इक्षा त कुरु पत स्वाहा -

- ने पोम दंत नो क सी दुवी न्याज्ञ यो मि पो त स्वाधी

ही पे ॐ अ क्षत्र ज पत्ता पाक पे को त स न धु को फल सा

चीन दे पे को सी ला पे शुरु ते

ॐ सीं की गुरु आण ॐ सीता राद्वे वी दुः ची गरा द्वे नी सी

ची माड़ा मा ढ़ी ई फल स्वाहा - ने पोम न म र को ह णु क

पा न रखा त थ्य ढी ढ़ ना ढ़ त्स स था था नो व न त्ते पा प न स

स्वप्ना ज्ञा न न ने सु ना नो म ह ई स्ती म स्वा से व ने त था

ज्ञा न मे ई त्ती - ॐ थ वी ना सी त थ्य मन्त्र

ॐ श्रीगुरु भार्गव ॐ भगवती गुरु पादुकाभ्यो नमः

कनकलस्थाने — श्रीमन्नवीकसी दुर्गा मन्त्र जप
तत्पश्चात् श्रीदीपे अक्षतजप ताम्रकुंकेतीक्ष्णे दुं
वेष्टित सप्तगंधयुक्त पंचवर्ण रंगाचे ठळक
ताम्रपात्रावर नेताना सप्तधान्य ताम्रपात्रात सप्तधान्य
ताम्रपात्रावर ठेवावे

ॐ नमो गुरु भार्गव भार्गवी मुखस्तुते मुखरात्र श्रीमन सीता
सती माम् पाहि पाहि तस्मै नमः — चार — ६ — मनोसी
रुद्रा पात्रे ठेवे

ॐ भूर्भुवः स्वः — चार — ? — ही ॐ सप्त धान्य
सहास्मि तोरा के मया कृते मम पाम् पात्र मनासीक
मोना वेस्त्र कृते के ठेवे

श्रीगुरु भार्गव सीधा तस्य भार्गवी वाक्य माहात्म्य
योगीनीस्थे भार्गव ठेवे कुंकुम स्थाने — चार — ? श्रीमन्
न भाद्रावर षष्ठ स्त्री चर ग्रंथ मीसीतीस्थे के घरी

अ आमीवावा आमी गुरुहुं कावा हुं कावा हुं कुं वी द्या
गुरुनामावी द्या फलमन्त्र हुं फत स्याहा — धार — ५
लोहो आगन लंज मंडलासालाणा दापुं लहो सजे पत
पाड़ दी गई ॥ २ ॥
तीनैंइ स्वरवाचा — धार — ३ — धोमन्त्र न मेव पूजा
ईकीनीनागपुरसमधीम दुभनी मीसनमंडमंडु —
अकीतीदेवीकोसत्ये पूजत स्याहा — धार — ५ — नी
तेंइनमोबुद्धापधाम सयुनासउड़ —
कुंडमालवतमोटीस्याहा — धार — ३ — धोमन्त्रन मेव पूजा
तघातगुलीकापेंडकड़लो —
जमालीकुमारीस्याहा — धार ५ — मेंगलन मेवपूजात
मक्के उड़ता ॥ सकुनन्तु पोमांकपूजा लँघसमधी सेतपु
तपूजसयुतीबजड़लो
अ सीधीगउड़ आगन लेना उतीहुंहुं स्याहा — धार ७ — धाम
धनसालुंडनगुलाकापेंडो मनपूजा उदेसन्दरका उड़ुतीलो —
अंडलेभेले अंडि — धार — ७ — भोम्मनसयुपूजा पालीस्वो वस
भरेपाज : चुंडुगाजवापेंडकड़लो —
पन्दसकेकेकेकेकुलसीजीमालाजीजीनीभेंडुस्याहा — ५०
जपमंत्र — १ दैवीपाकेंडुमन्त्र

ॐ ऐसे अघोरमन्त्रोंमन्त्रोसाहो - घर-३- अक्ष
तला - धार - ५०८ देवी दीन्हे ऊ मन्त्र ——
ॐ लोलो घ्रं घ्रंसबहा - धार - ५० - ४ - नागधार - १ -
कोलडोंडोंके ऊ ।

ॐ हैं ना अरजा का पुरुष कृतस्याहो - धार - १ - को
ऊदी के ऊ मन्त्र

ॐ ह्रीं ह्रीं हनुमान कृतस्याहो - धार - १ - अक्ष तृसा
१०८ कोसा पोके ऊ

ॐ पसीं नहीं दीं ऊ मार स्याहो - धार - ५२ - धोमत
न मेन झाल्ली हिंग पोके तो झाली माला बांस्या पे आ
इत्ता बार इथ्रु ना धो ऊ ला सु भ्रं घ्रं मन्त्र पसीं ना ऊ वा
का रा दृ के का नीचे

ॐ मातेकु माली स्याहो - धार - ५ धोमत्तन मेव घ्रा त म
के न ऊ ली सुनन्द घ्रा मान घ्रा न ली पसकी से त पे सन्तु म
हि ऊ ली धोमन्त्र का ने दृ द मोर पोदा मात ऊ ली सुभा
ॐ पसीं नमातेकु मन्त स्याहो - धार - ५ - धोमन्त न मेव घ्रा
के ऊ भस्म घ्रा त न मासु इत्ता त्तमत्त नी घ्रं सबु ज्ञा नान
ऊ ली

३ पसीनाकृत स्याहा — भोमन्त्रेनसन्तु पुजा पाठ —
३ हडी की स्याहा — धार — २ — भोमन्त्रो नट्टा नट्ट पुजा
पाठ जपनी
पसीना कुमारी — धार ६ — भोमन्त्रेन कुमारी साधन
पाठ जपनी सन्तु पाठ दे घोड़े जपनी मसानघा मादोषा
तपना
पसीना मवानी स्याहा — धार — २ — भोमन्त्रो घरतन
छुटन मसानघा नीवतापुरा के घपा पेट वपा तेढ़.

बने तो तुरन्त सन्त फकीर जपनी
पसीना को तुकुमारी स्याहा — धार — ५ भोमन्त्रेन घरा
तसाक्ष पाठ मन्त्र नो न्यो न्द्रा पेढ़ो के जपनी
पसीरा भसमारी स्याहा — धार — ७ भोमन्त्रेन मीतफल से
उलोइ का पक्का मुढ़ो के जपनी
इंई मछली स्याहा — धार — ६ — भोमन्त्रेन सन्तु पुतला
हेतो पुतलो इ भक्षण उसी कुर्ची हो मा तसे ताढ़े जपनी
सन्तु पुरुष को जपनी
पसीना इ षपउ मारी स्याहा — धार — ८ — भोमन्त्रेन
साधन पाढ़े की लोह चाजो त — २ — कड़ा जो

कयाप्रेषणसमुद्देसइड्ढीपत्तपमुहछलो
३ कालकालमारस्याहा—चार-६ भोमन्नसमुद्दा
हेसकालमेहनद्धोपेसत्तुद्दाहेसमसमइड्ढीकेत
दोजातपमाणपुरुसानेपमाणोद्धलक्खपेउइल
३हिमालचुल्लहीमारी—चार-व भोमन्नकुमा
रीसामनपमाणेसत्तन्नाघोउइलोरुअम
रीकुमारीस्याहा चार ४ भोमन्नकुमारीसा
मनोपमाणेपंचवन्नीइड्ढीजुइपमाणसत्तीन्नाघोउइ
३हीहीहीस्याहा—चार ६ भोमन्नासमुद्दाहुउपात्तीं
समुद्देतीकाघेउइ
३उइहआगमत्तीनोस्याहा—चार ७ भोमन्नासमाउदीके
३नमोउइहआगा ३वीवीअन्नासमीवृहीफलस्याहा
चार—७—भोमन्नेअक्कोचत्तपाहारुपाकोलक्खपातुत्तीन२
३नमउइहआगमक्कनाचत्तामनीहसनाचत्तेनोलाइछ
—३—एरवदीसागपमनीआउन्नईनोनदीसागसेयनीआउन्न
पद्मनदीसागपमनीआउन्नउच्चईसागपमनआउन्नना
नक्कोआमालेदसमसनआहारआन्नु चार—१ भोमन्नसा
उकापुक्कसंकासात

ॐ ऊंठ आगम नीकी ढोमाल ढोपुन्ना ढोमाल भेटीक
तस्याहा — धार २ — धोमधा मीत्ता पेगु ढामे पाप्त —
ॐ श्रीगुरु आगम पंथर ढा माहोर ढोनजागीर ढा
कर घास्याहा — धार ३ — भोमन धमन नड़ मीनाथी मन
ग्रमाल साम्मान पड़ाड़न नड़ भाग्र मदु छेती
ॐ श्रीगुरु आगम ॐ नमड़ि भाद्रा मन फड़ी गाड़ को राक्षसा
उरी डाफ़ु तामत — धार — ? — गाप्रा धोतना मंत्र पाप्त फ़ारी मंत्र
— ३ — तुफ़ा पेके को
ॐ श्रीगुरु आगम ॐ लीलि रसुधा लाले पी फ़ु तस्याहा — धार
— ? — भोमन धा ली ग्रपतापमा मानने ग्रामे मनड़ु ल वीपे पुग
वी पेके उड़ती
ॐ श्रीगुरु आगम ॐ षतानी का ढोमाहि मैड़ु रमता
रेम तीड़ी फ़ु त स्याड़ा — धार — ? — धोमधा ढोकवीत
भाद्धा पा टव्यापतस्य पोढ़ थी सापी य सुका नथी
सोज्ञास तसेवी का सीढ़ा प्र चल ढ़ नास्या पी का स्थिर
ढ़ु पोड़ मापु
ॐ हुरीना को नान्दन्ढ ढ़ु पोनास्याहा — धार — ८० ढोक
ज्वाला पु ढ़ु ढ़ु स्ड़ु ले ज्ञरेस्वाहे गु
ॐ उड़ स्ले मुसले फ़ु — स्त्री — सिद्धा — धार — ? — धोमधा न

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं परब्रह्मपुरुषाय कृष्णाय गोपीजनवल्लभाय स्वाहा ॥ मन्त्र ॥

ॐ गोपीजनवल्लभाय नमः ॥ पीठ ॥

ॐ गोपालाय अनन्ताय विश्वरूपाय विश्वजिते विश्वरक्षकाय
प्रधानपुरुषायाव्ययाय परमात्मने श्रीकृष्णाय नमः ॥ हृदय ॥

ॐ देवकीसुताय विद्महे वासुदेवाय धीमहि तन्नः कृष्णः प्रचोदयात् ॥ गायत्री ॥

ॐ गोपालाय विद्महे गोपीजनवल्लभाय धीमहि तन्नः कृष्णः प्रचोदयात् ॥ गायत्री ॥

ॐ गोपीजनवल्लभाय विद्महे परमपुरुषाय धीमहि तन्नः कृष्णः प्रचोदयात् ॥ गायत्री ॥

ॐ नमो भगवते गोपालाय सर्वजनवशंकराय सर्वस्त्रीहृदयोन्मादनाय
सर्वपुरुषवशीकरणाय सर्वदुष्टमृगव्याघ्रसर्पभयनिवारणाय
सर्वव्याधिविनाशनाय सर्वदुःखप्रशमनाय सर्वोपद्रवनिवारणाय
सर्वभूतप्रेतपिशाचभयविनाशनाय सर्वशत्रुसंहारणाय
सर्वपापप्रशमनाय सर्वदुष्टग्रहनिवारणाय सर्वारिष्टनिवारणाय
सर्वपुरुषवशीकरणाय सर्वसौभाग्यदायकाय सर्वसम्पत्प्रदाय
सर्वापमृत्युविनाशनाय सर्वकामफलप्रदाय
ॐ नमो भगवते गोपालाय सर्वजनहृदयानन्दाय सर्वजनवशंकराय
सर्वस्त्रीहृदयोन्मादनाय

ॐ नमः शिवे आगच्छ वज्रेश्वरी स्वाहा । ॐ
नमः शिवे आगच्छ वज्रेश्वरी स्वाहा । ॐ नमः शिवे आगच्छ
वज्रेश्वरी स्वाहा । ॐ नमः शिवे आगच्छ वज्रेश्वरी स्वाहा ।
ॐ नमः शिवे आगच्छ वज्रेश्वरी स्वाहा । ॐ नमः शिवे
आगच्छ वज्रेश्वरी स्वाहा । ॐ नमः शिवे आगच्छ
वज्रेश्वरी स्वाहा । ॐ नमः शिवे आगच्छ वज्रेश्वरी
स्वाहा । ॐ नमः शिवे आगच्छ वज्रेश्वरी स्वाहा ।
ॐ नमः शिवे आगच्छ वज्रेश्वरी स्वाहा । ॐ नमः शिवे
आगच्छ वज्रेश्वरी स्वाहा । ॐ नमः शिवे आगच्छ
वज्रेश्वरी स्वाहा । ॐ नमः शिवे आगच्छ वज्रेश्वरी
स्वाहा । ॐ नमः शिवे आगच्छ वज्रेश्वरी स्वाहा ।
ॐ नमः शिवे आगच्छ वज्रेश्वरी स्वाहा । ॐ नमः शिवे
आगच्छ वज्रेश्वरी स्वाहा । ॐ नमः शिवे आगच्छ
वज्रेश्वरी स्वाहा । ॐ नमः शिवे आगच्छ वज्रेश्वरी
स्वाहा । ॐ नमः शिवे आगच्छ वज्रेश्वरी स्वाहा ।

ॐनमो गुरु आगम डाल फल्लाहि फल्ला स्वाहा - आर - २५ -

भैरवनाथ मीन स्थान मछुवे कुलले ——— ———

ॐनमो गुरु आगम आलु नाथे हि फल्ला स्वाहा - चार -

१७ - भैरवनाथ मुख गुरु मछुवे कुलले ——— ———

ॐनमो गुरु आगम श्री ब्रह्म नाथ नी बुज्र योगीनी वं देवी

तार वस नाम हि फल्ला स्वाहा - चार - ? - गा वं ज्ञाल लस वसे

मा झे ली ब्रह्म मोसन्त्र

ॐनमो गुरु आगम ॐ भैरवाय स्वाहा - चार - ५ मुसीन

मा नो सीद्ध नाथ द्धा नाइ क्षा तपाहि ले —

श्री गुरु आगम श्री ब्रह्म वाराही आगम वैतेउ काल सप्तै लेख

लपै तेसु ले पेते पेड़ वी दुकान्स्री मिर्न मली कथुस

कुमा ली काल उमारनी - चार - ? - म मछुवे को मुछी

लख वारा तोर्नके मछुल

श्री गुरु आगम ऽ कौसल्या हनुमान की सी दनी वी दस्पा

हि फल्ला स्वाहा - चार - व व पोसन्त्र हि हनुमान जप माद -

ॐ श्री सिद्धगुरु ॥ ॥ विद्युत मंत्र
नमः हो ॥ ॥ ॐ जलं स्तंभय २ मम
दुष्टप्रदुष्टान् सर्व दुष्ट पात्रान् सर्व दुष्ट
मनुष्यान् सर्व दुष्ट चित्तान् दुष्ट मौनु ६
स्तंभय २ मारय २ सर्व वाङ्मनः स्वाहा ५
॥ वौउसी भूत प्रेत पिशाच को ग्रहणे
मंत्र हो ॥ ॥ ॐ अमृत गहनी वज्र
प्राये ईं कि

ॐ

ॐगुरुप्रेतवीर्यु मुटवीर्यु वायुवीर्यु
धुंब्रह्मेसत्वीर्यु क्षेदवीर्यु कुलवीर्यु
व्यापदवीर्यु भुतवीर्यु प्रेतवीर्यु पी
शासवीर्यु मुसानवीर्यु सेहीमसान
कुलीवीकालघरेमहुं फुरासिउहि
मरेभैरवपाडहीमरे फुरमंतरईश्वर
मातादेवकीतुमारेसत्यनाथा ॥ ७॥
ॐसमीत्रलेगुरुप्रेतडकीनीवीननेमंत्र
हो॥ ॥ॐउंउंनमोडकीनीवीर्यु भुत
प्रेतपीशासवेतालवीर्यु श्रीब्रह्मादेव
नाकीआज्ञानीभुतमातोज्यासीलघोसो
मंत्रनावरा॥ ६॥ ॐश्रीगुरुआदेशगुरुको
नाहुंकारनीफेस्वाहा॥ ॥जपमंत्र॥ ७॥

ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं

ॐ गुरुजीके पग पखारे मेरे सतगुरुकी भ
क्ति पूरे मंत्र ईश्वर माता देव तुमारे स
त्य वाचा जप मंत्र ॥ २ ॥ यह वायु मुद्रा
दर्पणका गुप्त को मंत्र हो ॥ ॥ ॥
ॐ गुरु पुष्प पाती फुल पाती ले ही मु
द्रा जाती ता ही मंत्र री मा अंजना
उहा वै दूरी जावा हा था मुद्रे सने वै
ईश्वर माता जगत जनन तुलसा उईस्व
रमाता देव जोरा वर ना किवा चा
ॐ आराम बंधु नी की वा चा हनुमान वी
रहुहाई ईश्वर किवाचा ॥ जप मंत्र
॥ ३ ॥ ये समित्र ब्रह्मा गार पनी चो नी पिंडा
ईश्वर पुष्प को मंत्र को तुन्द
मुद्रा को तुन्द ॥ ॥ मुद्रा
मंत्र ने मंत्र को ॥

ॐ गुरु सबो धुनु रु बो ती दा हा म ऊ
छो दे ऊ की ऊ ऊ छा गा रु की वा चा गु रु की
स ति मे री भ ती पु रु म ई स्व रु मा हा
दे व की वा चा ॥ ॥ ज प मं त्र ॥ १७ ॥ यै स
वे ले उ फे रा सी हे ले झा री दि नु सा तै ई
प ट्ट क दे ले का ती झा री दि नु ना को कु न्द
॥॥॥ ला यै ला गा को झा र ने म त्र हो ॥॥

ॐ गुरु ब्रं धो प्रा जा ये फ द स्व हा ज प
मं त्र १७ मा ये ज गा ऊ ने मं त्र हो ॥॥॥
ॐ गुरु ज्ञा दे ताले मा थो से जि मं त्र री ज गा
ई हा कु ऊ ने ई ती र फ ता कि र मं त्र ना ग नु
गी द गा ऊ ने स्या र मो सू ज फा जी न्न प ॥
मा ने ज गा ऊ ने मं त्र हो ॥॥॥ ॥

ॐ गुरु ज्ञा सै ई ला गा ला प गा ला च न च न
पो २ को च न न त प ता द ला गा ड़ु ल

राजावै ॐ ये सिद्ध राजाओ वै परर मे
ॐ ईश्वर माता देव तुमारे सत्त वा चल
ि ईश्वरी वा चो ओ माई ँ द्रनाथ की वा
की सती वा चो ओ माई ँ द्र नाथ की वा
ॐ सती वा चो ओ माई ँ द्र नाथ की वा
॥ ७ ॥ ये सब मंत्र ले के म. रज गुरा को चा
रसु रुमा ज्र को मा ता लम ई सी धु रज्ञ
के ले ले पु जा ज री धु प ती दे के मं त्र रा ज
गा ई के मत्त मा द्धर दी नु ॥ / ॥ ॥
ॐ नमो युरु ज्ञागे उनागने मन्त्रको — ॐ धूल
तीन र सीध जीवलती का पे जोउना का रुन र
सीधजी की लाप जाहाड़ी की कनाड़ी की ठुक
करे धूल का रे कलं पु प्र का रे मु ह्र का रे घा ती
पर ती मरे न रसि ध गुरु को सत्त पैरा
भ ती पुरर मंत्र ईश्वर माता देव की वा

श्रीफलस्नाता-जप मंत्र। ३॥ ॐ ह्रीं
मंत्र जल ता गुरु ने कुम्भ — (।)
ॐ गुरु रत्न मञ्जु मा कुम्भ मुख ॐ रूप
स्था को जी वा का दुःख दर्प त्या को
फोरी वा का दुरित ताप स्था को प्रा ली को
दुःख ता स मुद्र पार सुख दे जो ई लाग
पुर मंत्र ई श्वर माता देवानु मा रे सत वा
वा-जप मंत्र-1 — ये स मंत्र ले सा तो वो लाज
मंत्र हो ॥ ॥ ॐ गुरु जल थल रूक वे ला
ई भैरे भे दुःख क्ष ष्ट्रा कुल मिलौ प्रा
न वृ त स्व गग फ़ाकोज नु वाल ष्ठ ष्ठो को
सा तो ओ फ़ो न न्दि वा यु फेरा ३ क्षौं ताडू
दी नदुः ख श्वर माता इव जी राजा वं त्रा की वा
वा ॥ जप मंत्र - ३ ये स मंत्र ले ओ षज त्ल सी
रमा ध की पे का का नमा ३ के रा पे का का
नमा ती न फेरा ॥ ॥ के ती के ती के ती पे
त मंत्र ने मंत्र हो ॥ ॥ ॥

ॐ गुरु सुनकि तर ख़ार रूप की मै
कैना घा ता कत व क का जी ज्ञा सा तम्
त्र पा र वु स्व गा न उ क क पा नी म सु त क की
दु हा ई क मी पर सु स्वा ता -॥ जप मैं त्र
१७ - ग्र म वै ई उ न मैं त्र हो ॥ ॐ गुरु
ह ष फ त्रो मै ई स्व रे ते ल भा वै रा म चं न्द्र
ई म ते ल भि त्र जा व ही रा ता ही जा ते ल म र्त
ठ नु मा न वी इ की वा चा -॥ जप मैं त्र धा र
१३ ॥ ये स म त्र ते ग्र फ त्र ग्र र ख़ि या को वे
ता मा ते ल मैं त्र ग्र ध्या ख़ा व ा उ नु ग्र ध्या
ष सा नु ग्र मैं त्र ग्र ग्र ग्र व ं या ❀❀❀
सा तो वो ला उ ने मैं त्र हो ॥ ॥
ॐ गु त्र ग्र म त की दे हा को ति को त
नु क्त को दा उ ग्र व र का स का चन्द्र सु र्ज
द त्र ता ल का वा को ग्र रा ज मे ज रा ज जा

ॐ गुरु बन्दौ लंका नाती को सातो नी ग्रो फू
को तेरी मा ग्रा ऊ फुर मन्त्र ई स्वर माता
गौ ऊ पाताल की नाथ जप मन्त्र ॥ २ ॥ मसा
नदी रा ऊ नेमी त्रसो ॥ ॥
ॐ गुरु ई कन्त नर सिद्ध जी वी कन्त मे दूधो
री म सानो घी रा ऊ घो ऊ दी सा ई मा र घ्रा
जा ताज प्रेता द्री जा लु न्धा के को नो री
व्र ज्र के हँ व्र ज्र वी धुं द्र स म ध्यं पा वो नर
सिंध जि कि सा तो मेरा भा तो फ द्र स्व
हा भा नि फुरा मन्त्री स्वा हा ई नु स
र्व दो ष जा न्द्र ॥ ॥
ॐ नमो रत्ना जो री ई न मे रे पा स हु जं को।
ना सगरी यो भनी ॥ ॥ फेरा मन्त्री
री दी न्द्र सर्व दो ष जा न्द्र ॥ जु गा का
दने मन्त्र हो ॥ ॥ ॥ ॐ गु रु ज ल य
ल पौ ले घेर ते रा घर कि रा पे न्म का ती

कुतीनलोपारीभछमगरी पुद्मंत्र
ईस्वरमाता देवतुमारेसतवाचो ॥ज
पमंत्र १७ ॥ राती दिनेछेरी भुतप्रेतनेतें
मसाउनओ योगनेजपनेमंत्र ॥ ।
ॐ गुरुहूँहूँहूँहूँहूँहूँहूँहूँहूँहूँफट स्वा
हा ओमंत्रजपनु बडेसीकछपोजप
नुसर्वभयनासतिजपमंत्र ॥ २ ॥ जी
उवात्रेमंत्र हो ॥ ॥ ॐ गुरुजलवीर्धु
थलवीर्धु थलकीलमकछासवीर्धु
पतालवीर्धुवारैईवायवीर्धुवारैईपा
णवीर्धुचारैईदीसावीर्धुचारैईवोउ
किवीर्धुछकछासचारैईकीलो
वीर्धुचारैओउहासवीर्धुडोरीपा
वीधुजलकछासवीर्धुपतुतालुपाँछ
पारेहेलोकावीर्धुवारैहूँक्याधावीर्धु

प्रसन्नवीर्धुवारे इंद्रजगुणावीधुतेती
गजुगावीधुनेईरीतनेवाधुतीनृतो
कवाँधुअकनासूईंद्रराजपेत्रतानकी
धुंकोसकेंद्रभनूवेनूवाधुकोरावी
धुंकोरावीधुंषरपातुवाधुंप्रात
हाचहतीस्फारमतीवांधुंभवोई
वांधुवांधुंकालीकामाईभगवती
कोसतेवाचागुरुकीसतेवाचाहनु
मानीरचौउकीफीरेईचंद्रमुखे
कोउताईचंद्रमुखसाधीफुरमंत्र
ईस्वराचादेवेतुमारेसतेवाचा।।ज
पमंत्र।।१।।घेसमीलेप्रतावीभु
तमंत्रसीचारैधीसाधारीआपुजी5वो
नु।। ।।अनागाकोडाकामारनेमंत्र
हो।। ॐहिमालकीदेवीसीमालमा

लासुनंकि व़धा न्लुहा को ला ई
फदगुस्तनुमान वि इकी वा चो
मनी ज पेरा मंत्र नागरी पुरक ०तु
म्र ग्रा को डाहा मरी जान्द न ला पो
को लालो पानि को पनी ए डाहा मरी
जान्द ॥ ॥ सर्प को वी ष्वकार के म
त्रे हो ॥ ॥ ॐ सर्प विष ग डुर ना रा
नले नि ला को वौट को व़ष ती खोजी
लाई घा ऽथ का या घ ष्टि सु श्रषा
व ज्रे जा इ ला ग्लाज ग डुर की वाक्य
जप मंत्र २ ।७। सुन व सी हले ला ष
धानु ॥ ॥ ये स को ग्रौ ऽ धी ग्रै ई
सेलु को मुन्ना दा ले ला पी ती पी
ला ऽन्नु चे घा ई घा ऽ मा ल क्ली

पानुहोस् को हो ईजन्द्र ।। ।।
सर्प को डाक्ने जात को मन्त्रले मन्त्र हो ।।
ॐ भद्रम मन्त्र मन्त्र मोहने उच्चाटय स
र्व ई सर्वत्र मोदनु मानविरम्भ
भि भी भो ती भुमन्तुले मन्त्र दे
ही सकल प्रदवा सस सर्प को को
डाक्ने जात को जात को सर्प को सालहु
तेला गर्या को जात हो भनी नौ उति भी
नै हीला नुहुन्छ दिनु समचारलमाला ई
पानी मन्त्र ले छुवानु पर्छ जो जो
भनी मन्त्र गर्नु पर्नी को हो ईजन्द्र

830

আশা সংস্কৃতি
830
ASHA ARCHIVES